

रविवार 31 मार्च, 2019

विषय — वास्तविकता

स्वर्ण पाठ: सभोपदेशक 3 : 14

“मैं जानता हूँ कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि लोग उसका भय मानें।”

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 19 : 1, 7-10, 14

- 1 आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।
- 7 यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;
- 8 यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है;
- 9 यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।
- 10 वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं; वे मधु से और टपकने वाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं।
- 14 मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करने वाले!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 16 : 1, 2 (सं:), 5, 8, 10, 11

- 1 हे ईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूँ।
-

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड किरिचयन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने किरिचयन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 2 मैं ने परमेश्वर से कहा है, कि तू ही मेरा प्रभु है; तेरे सिवाए मेरी भलाई कहीं नहीं ।
5 यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है; मेरे बाट को तू स्थिर रखता है ।
8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न
डगमगाऊंगा ॥
10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा ॥
11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता
है ॥

2. यशायाह 43 : 1-5, 7

- 1 हे इस्राएल तेरा रचने वाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे
छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर बुलाया है, तू मेरा ही है ।
2 जब तू जल में हो कर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में हो कर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी;
जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी ।
3 क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ । तेरी छुड़ौती में मैं मिस्र को और
तेरी सन्ती कूश और सबा को देता हूँ ।
4 मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ, इस कारण मैं तेरी सन्ती मनुष्यों
को और तेरे प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगों को दे दूंगा ।
5 मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; मैं तेरे वंश को पूर्व से ले आऊंगा, और पच्छिम से भी इकट्ठा करूंगा ।
7 हर एक को जो मेरा कहलाता है, जिस को मैं ने अपनी महिमा के लिये सृजा, जिस को मैं ने रचा और बनाया है ॥

3. दानियेल् 3 : 1 (से 1st), 8, 9 (से 1st), 12, 14, 15 (यदि आप पूजा नहीं करते हैं)-18, 21, 24, 25, 27

- 1 नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिनकी ऊंचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छः हाथ की थी ।
और उसने उसको बाबुल के प्रान्त के दूरा नाम मैदान में खड़ा कराया ।
8 उसी समय कई एक कसदी पुरुष राजा के पास गए, और कपट से यहूदियों की चुगली खाई ।
9 वे नबूकदनेस्सर राजा से कहने लगे, हे राजा, तू चिरंजीव रहे ।
12 देख, शदरक, मेशक, और अबेदनगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं, जिन्हें तू ने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर
नियुक्त किया है । उन पुरुषों ने, हे राजा, तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की; वे तेरे देवता की उपासना नहीं
करते, और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है, उसको दण्डवत नहीं करते ॥
14 नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा, हे शदरक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं
करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत नहीं करते, सो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते
हो?

- 15 ... और यदि तुम दण्डवत ने करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?
- 16 शदरक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।
- 17 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।
- 18 परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे॥
- 21 तब वे पुरुष अपने मोजों, अंगरखों, बागों और और वस्त्रों सहित बान्धकर, उस धधकते हुए भट्टे में डाल दिए गए।
- 24 तब नबूकदनेस्सरे राजा अचम्भित हुआ और घबरा कर उठ खड़ा हुआ। और अपने मन्त्रियों से पूछने लगा, क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बन्धे हुए नहीं डलवाए? उन्होंने राजा को उत्तर दिया, हां राजा, सच बात तो है।
- 25 फिर उसने कहा, अब मैं देखता हूं कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उन को कुछ भी हानि नहीं पहुंची; और चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य है॥
- 27 जब अधिपति, हाकिम, गर्वनर और राजा के मन्त्रियों ने, जो इकट्ठे हुए थे, उन पुरुषों की ओर देखा, तब उनकी देह में आग का कुछ भी प्रभाव नहीं पाया; और उनके सिर का एक बाल भी न झुलसा, न उनके मोजे कुछ बिगड़े, न उन में जलने की कुछ गन्ध पाई गई।

4. लूका 17 : 11-14

- 11 और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था।
- 12 और किसी गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले।
- 13 और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर।
- 14 उस ने उन्हें देखकर कहा, जाओ; और अपने तई याजकों को दिखाओ; और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए।

5. I कुरिन्थियों 13: 9, 10

- 9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
- 10 परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।

6. I यूहन्ना 5: 18, 20

- 18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।
- 20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

7. रोमियो 12: 1, 2

- 1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
- 2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो ॥

8. मत्ती 5: 48

- 48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है ॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 335: 27-28

वास्तविकता आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण, अपरिवर्तनीय, अमर, दिव्य, शाश्वत है।

2. 475: 11-13

मनुष्य आध्यात्मिक और परिपूर्ण है; और क्योंकि वह आध्यात्मिक और परिपूर्ण है, उसे किरिश्चियन साइंस में उसी तरह समझा जाना चाहिए।

3. 259: 6-21

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

यदि मनुष्य एक बार परिपूर्ण था, लेकिन अब अपनी पूर्णता खो चुका है, तब मनुष्यों ने ईश्वर की प्रतिवर्त छवि को कभी नहीं माना। खोई हुई छवि कोई छवि नहीं है। सच्ची समानता दिव्य प्रतिबिंब में खो नहीं सकती। इसे समझते हुए, यीशु ने कहा: "इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है" ॥

4. 253: 32-8

यह दिव्य मांग, "इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो" वैज्ञानिक है, और पूर्णता की ओर ले जाने वाले मानव पदचिह्न अपरिहार्य हैं। व्यक्ति सुसंगत हैं, जो देख रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं, "वे दौड़ सकते हैं और नमित करेंगे, जा रहे हैं और थकेंगे न," जो तेजी से अच्छाई हासिल करते हैं और अपना स्थान प्राप्त करते हैं, या धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं और निराश नहीं होते हैं। भगवान को पूर्णता की आवश्यकता है, लेकिन तब तक नहीं जब तक आत्मा और मांस के बीच लड़ाई नहीं होती और जीत हासिल होती है।

5. 414: 26-31

होने की सत्यता का ध्यान रखें, वह आदमी भगवान की छवि और समानता है, जिसमें सभी दर्द रहित और स्थायी हैं। याद रखें कि मनुष्य की पूर्णता वास्तविक और निर्बाध है, जबकि अपूर्णता दोषपूर्ण, असत्य है, और दिव्य प्रेम के बारे में नहीं है।

6. 275: 20-24

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सभी मन है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, - अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में मन की अभिव्यक्ति है।

7. 337: 10-11

ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार, मनुष्य एक प्रकार से पूर्ण रूप में मन के रूप में है जो उसे बनाता है।

8. 353: 14 (समय)-19

समय अभी तक अनंतता, अमरता, पूर्ण वास्तविकता तक नहीं पहुंचा है। सभी वास्तविक शाश्वत हैं। पूर्णता वास्तविकता को रेखांकित करती है। पूर्णता के बिना, कुछ भी पूर्ण वास्तविक नहीं है। सभी चीजें गायब होती रहेंगी, जब तक पूर्णता प्रकट न हो जाए और वास्तविकता सामने न आ जाए।

9. 478: 24-27

शुरु से अंत तक, जो कुछ भी नश्वर है वह भौतिक मानवीय विश्वासों से बना है और कुछ और नहीं। केवल वही वास्तविक है जो ईश्वर को दर्शाता है।

10. 130: 32-5

सत्य को त्रुटि के रूप में इतना आश्चर्यजनक और अप्राकृतिक नहीं होना चाहिए, और त्रुटि को सत्य के रूप में वास्तविक नहीं होना चाहिए। स्वास्थ्य के रूप में बीमारी इतनी वास्तविक नहीं लगनी चाहिए। विज्ञान में कोई त्रुटि नहीं है, और हमारे जीवन को सभी के दैवीय सिद्धांत भगवान के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए वास्तविकता से शासित होना चाहिए।

11. 475: 28-5

मनुष्य पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए अक्षम है। वास्तविक मनुष्य पवित्रता से विदा नहीं कर सकता, न ही परमेश्वर, जिसके द्वारा मनुष्य का विकास किया गया है, पाप करने की क्षमता या स्वतंत्रता प्रदान करता है। एक नश्वर पापी भगवान का आदमी नहीं है। नश्वर अमर के नकली हैं। दिव्य विज्ञान में, ईश्वर और वास्तविक मनुष्य दिव्य सिद्धांत और विचार के रूप में अविभाज्य हैं।

12. 258: 25-30

मनुष्यों में आध्यात्मिक व्यक्ति और उसके विचार की अनंत सीमा का बहुत ही अपूर्ण अर्थ है। अनन्त जीवन उसी का है। अनंत काल तक ईश्वर की सरकार के तहत, कभी पैदा नहीं हुआ और कभी नहीं मरना मनुष्य के लिए, उसकी उच्च संपत्ति से गिरना असंभव था।

13. 297: 32 (रोग)-4

बीमारी, पाप और मृत्यु मानवीय निष्कर्षों की अस्पष्ट वास्तविकता हैं। जीवन, सत्य और प्रेम ईश्वरीय विज्ञान की वास्तविकता हैं। वे विश्वास में डूब जाते हैं और आध्यात्मिक समझ में पूर्ण चमक प्राप्त करते हैं।

14. 393: 29-4

मनुष्य कभी बीमार नहीं होता, क्योंकि मन बीमार नहीं होता और न ही पदार्थ हो सकता है। एक गलत धारणा दोनों बहकानेवाला और प्रलोभन, पाप और पापी, बीमारी और उसके कारण है। बीमारी में शांत होना अच्छा है; आशावादी होना भी बेहतर है; लेकिन यह समझना कि बीमारी वास्तविक नहीं है और यह सत्य इसकी वास्तविक वास्तविकता को नष्ट कर सकता है, सबसे अच्छा है, इस समझ के लिए सार्वभौमिक और सही उपाय है।

15. 161: 3-10

आप कहते हैं, "मैंने अपनी उंगली जला दी है।" यह एक सटीक कथन है, जो आपके अनुमान से अधिक सटीक है; क्योंकि नश्वर मन इसे जलाता है, न कि कोई पदार्थ। पवित्र प्रेरणा ने मन की अवस्थाएँ पैदा की हैं जो आग की लपटों को कम करने में सक्षम हैं, जैसे बाइबिल में तीन युवा हिब्रू बंदियों को बेबीलोनियन भट्ठी में डाला गया था; जबकि एक विपरीत मानसिक स्थिति सहज दहन उत्पन्न कर सकती है।

16. 260: 7-12

नश्वर, गलत विचारों की धारणाओं को आदर्श होना चाहिए, जो आदर्श और शाश्वत हो। कई पीढ़ियों के माध्यम से मानव मान्यताओं को दिव्य अवधारणाएँ प्राप्त होंगी, और भगवान की रचना का अमर और आदर्श मॉडल आखिरकार होने के एकमात्र सच्चे गर्भाधान के रूप में देखा जाएगा।

17. 470: 11-16 (सं 1st.), 32-5

ईश्वरीय विज्ञान अमूर्त कथन की व्याख्या करता है कि निम्नलिखित स्व-स्पष्ट प्रस्ताव द्वारा एक मन है: यदि ईश्वर, या अच्छा, वास्तविक है, तो बुराई, ईश्वर की अवांछितता, असत्य है। और बुराई केवल असत्य को वास्तविकता देकर वास्तविक प्रतीत हो सकती है।

ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार, विज्ञान में अविनाशी हैं; और विज्ञान न तो कोई चूक जानता है और न ही सद्भाव में लौटता है, लेकिन ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें ईश्वर और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, जो उसके शाश्वत इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक किरिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वेषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6